पत्र

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज

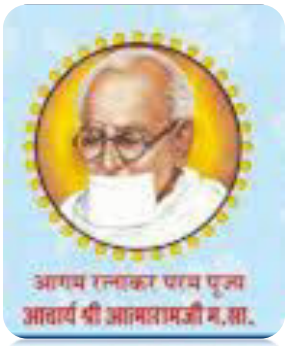

आपके ई-पुस्तकालय में लेखक उपाध्याय आत्माराम जी का जीवन परिचय अनउपलब्ध है, मैं उनके जीवन काल का चित्र प्रस्तुत कर रहा हूँ, कृपया आप इसको वहाँ उपलब्ध करवाए

आचार्य सम्राट् का जन्म छोटे से गांव राहों में श्रीमनसाराम चोपड़ा परिवार में मातेश्वरी श्री मति परमेश्वरी देवी की कुक्षी में भाद्रपद सुदी बावन द्वादशी वि.स. 1939 तद्नुसार 24 सितम्बर 1882 को हुआ । छोटी उमर में ही मां बाप का साया सिर से उठ गया । दादी पर पालने का कार्यभार आ गया, कर्मो का चक्र वह साया भी बाल्यावस्था में सिर से उठ गया । पूर्व जन्मों का पुन्योदय से जैन संतो का सन्निध्य प्राप्त हुआ और आचार्य मोती राम जी महाराज के चरणों में रहकर जीवन के उत्थान की सीढ़ीया चढ़ने लगे उत्कृष्ट वैराग्य भावना की मन में तरंगे उठने लगी । ज्ञानोपार्जन करने लगे । बारह वर्ष की आयु में बनूड़ एक वृक्ष के नीचे आषाढ़ शुक्ल पंचमी वि. स. 1951 तद्नुसार 7.7.1894 को दीक्षा का कार्यक्रम रखा गया, भक्त नौरातारा‍म जी धार्मिक पिता ने आज्ञा प्रदान की और आचार्य मोतीराम जी महाराज ने दीक्षापाठ पढ़ा कर स्वामी शालिगराम जी महाराज का शिष्य घोषित किया । धर्म की लगन छोटी आयु में चन्द्रमा की चांदनी में शास्त्राध्ययन करने लगे और गुरुजनों के साथ भ्रमण करते हिन्दी, संस्कृत, पाली, प्राकृत, आप्रभंश, गुजराती, पंजाबी भाषा का ज्ञानर्जन कर धर्मप्रभावना करने लगे और श्रोतागण मन्त्रमुग्ध होने लगे । एकबार विचरण करते हुए स्यालकोट पहुँचे की हैजा के प्रकोप ने घेर लिया, अछूत की बिमारी कहीं और सन्तो को न गेर ले एक श्रावक ने दवाई के बहाने विष दे दिया, पुन्योदय एक कैय (उल्टी) आई और सारा हैजा निकल गया और स्वस्थय हो गए । विशिष्ट ज्ञान श्रुति ,मति, अवधि और मन पर्यव मानव ज्ञान की क्रमिक परम्परा है यह सर्वज्ञता भगवान बना देती है बतीस आगम कण्ठस्थ कर छोटी आयु में ही उपाध्याय की पदवी प्राप्त की । शास्त्रों का संस्कृत हिन्दी विवेचन कर प्रकाशित करने का निर्णय लेकर काम शुरु कर दिया उन दिनों जो लाहौर (पाकिस्तान) से ही प्रकाशित होते थे । उनकी शोभा मान मर्यादा उनके साहित्य पर ही आधारित है । सभ्यता का एकमात्र निर्णायक उनका साहित्य है । आप जानते थे कि जैनागम प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं जो संस्कृत से अनभिज्ञ है तथा जो प्राकृत का नाम तक नही जानता भगवान की वाणी का कैसे लाभ उठा सकता है । आगमों का सरल सुबोध भाषा में

अनुवाद का न होना ही स्थानकवासी परम्परा में शास्त्र स्वाध्याय का प्रायः आभाव सा हो गया था। कुछ ही आगम प्रकाशित हुए थे कि पाकिस्तान बन गया और सारी सामग्री (हस्तलिखित) वहां रह गई। लम्बा समय होने पर उन की उपलब्धता कम होने लगी कि आचार्य श्री का पौत्र शिष्य ध्यानयोगी आचार्य सम्राट डॉ शिवमुनि जी महाराज ने उन सब का पुन्न- प्रकाशन करवा कर सुरक्षित कर दिया। आचार्य कांशीराम जी के देवगमन के पश्चात सर्व सम्मति से पंजाब प्रान्त के आचार्य वि.स. 2003 को लुधियाना में घोषित किये गये और सादड़ी के महा सम्मेलन वैशाख शुक्ल 2009 को समस्त श्रमण संघ के जैन धर्म दिवाकर प्रथम आचार्य सम्राट घोषित किये गये . पचास वर्ष तक कुशल प्रवचनकार के रुप में पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात में धर्म प्रभावना करते रहे।

जिस प्रकार ब्राह्मण संस्कृति का आधार वेद हैं, बौद्धों का आधार त्रिपिटक, ईसाइयों का बाईबल, मुसलमानों का कुरानशरीफ, सिखों का आधार गुरु ग्रन्थ साहिब उसी प्रकार स्थानकवासी समाज का आधार 32 आगम हैं। इन आगमो के अतिरिक्त आचार्य श्री जी ने अन्य धर्म शास्त्र, दर्शन शास्त्रों का सुन्दर भाषा में विवेचन किया, युगों युगों तक आप का नाम साहित्य में चमकता रहेगा। 67 वर्ष संयम प्राय दीक्षा का पालन किया और काल के क्रूर हाथो ने 79 वर्ष की आयु लुधियाना (पंजाब) में संलेखना संथारा कर माघ वदी 9 वि. स.2019 तदनुसार ई सन 1961जनवरी 31 को महावीर चरणों में पधार गये।

आप श्री जी की शिष्य-प्रशिष्य परम्परा ने भी समय समय पर आप के नाम को चार चाँद लगाए जिनमें से प्रमुख श्री खजान चन्द जी महाराज श्री फूल चन्द जी महाराज, महाश्रुत श्री ज्ञान मुनि जी महाराज, उपाध्याय श्री मनोहर मुनि जी महाराज, भंडारी श्री पद्म चन्द जी महाराज, श्री अमरमुनि जी महाराज, भोले बाबा श्री रत्नमुनि जी महाराज ग्रामोद्धारक श्री क्रान्तिमुनि जी महाराज एवं वर्तमान स्थानकवासी समाज के शिखिर पुरुष ध्यानयोगी आचार्य सम्राट डॉ शिवमुनि जी महाराज एवं अन्य मुनिराज समाज को गति प्रदान कर रहे हैं। पुस्तके अपलोड करने पर धन्यवाद।

आप श्री जी के चरणों में पुनः कोटिश वन्दन करता हुआ जयजिनेन्द .....स्वतन्त्र जैन
9855285970 27.12.20-20